दैनिक नवीन कदम
रायगढ़ - आसपास
6
रायगढ़, शनिवार 05 दिसंबर 2020

नाबार्ड एवं सीएसआर जेपीएल की साझेदारी में संचालित वाड़ी विकास परियोजना ने बदली आदिवासी किसानो की जिंदगी

500 किसानों के 500 एकड़ बंजर, टीकरा व परिया भूमि में परियोजना का क्रियान्वयन

तमनार। नाबार्ड एवं ओ.पी जिंदल समाज कल्याण समिति, सीएसआर जिंदल पावर लिमिटेड तमनार के संयुक्त साझेदारी में विकासखण्ड तमनार के सीमांत आदिवासी किसान एवं उनके परिवारों के आर्थिक सुनिश्चत करने के लिए 'वाड़ी विकास परियोजना' का शुभारंभ वर्ष 2011 में किया गया। परियोजना के पहले चरण में 250 किसानों के 250 एकड़ एवं दूसरे चरण में वर्ष 2013 में अतिरिक्त 250 किसानों के 250 एकड भूमि का चयन कर कुल 500 किसानों के 500 एकड़ टीकरा व परिया भूमि में वाड़ी विकास परियोजना का क्रियान्वयन किया गया है। जिसमें फलदार आम, नीबू एवं काजू के पौधों का रोपड़ कर किसानों के आयअर्जन का माध्यम बनाया गया है। जिसे अपनाकर किसान आज अपने व परिवार के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आज ये फलदार पौधें वृक्षों का रूप लेकर फल देना प्रारंभ कर दिये हैं। कभी मात्र धान, उड़द एवं झुनगा जैसे पारम्परिक खेती पर आधारित ये किसान आज स्वादिष्ट दशहरी, लंगड़ा व आम्रपाली आम, काजू एवं कागजी नीबू का विक्रय कर अपना आर्थिक उन्नयन सुनिश्चित करने में सक्षम हुए हैं। वाड़ी विकास परियोजना नाबार्ड (राष्ट्रीय ग्रामीण एवं कृषि विकास बैंक) का आदिवासी विकास कोष (टी.डी.एफ) के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत एक आदिवासी विकास परियोजना है। इसके अंतर्गत आदिवासी किसानों के बंजर टीकरा व परिया भूमि में फलदार पौधे आम, काजू एवं नींबू को एक नियमित व निश्चित अंतराल में रोपड़ कर किसानों को मुख्य रबि, तिलहन एवं दलहन फसल धान, गेहूँ, मुंग, मुंगफली के अतिरिक्त फल की खेती कर आयअर्जन करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस परियोजना में आदिवासी किसान भाईयों के 01 एकड़ टीकरा व परिया भूमि में अच्छे किश्म के क्रमशः 25 आम, 20 काजू एवं 10 नीबू, कुल 55 पेड़ लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त इन पौधों के मध्य रिक्त भूमि में अंतरवर्तीय फसल साग, भाँजी लगाकर अतिरिक्त आयअर्जन सुनिश्चित की जाती है।

जेएसपीएल फाउण्डेशन, जेपीएल तमनार क्षेत्र की अग्रणी व्यावसायिक संस्थान होने के नाते एवं अपने सामाजिक सरोकारों के निर्वहन के अंतर्गत उपरोक्त परिस्थितियों से अवगत होते हुए क्षेत्र के किसानों के सर्वांगीण विकास के लिए नाबार्ड के आदिवासी वाड़ी विकास कार्यक्रम को माध्यम बनाने का निर्णय लिया।



वर्तमान में परियोजना क्रियान्वित ग्राम कचकोबा, आमाघाट, पड़कीपहरी, बासनपाली जरेकेला, तमनार, महलोई, पड़ीगांव, छर्राटांगर, बिलासखार, देहरीडीह, पाकादरहा, डोकरबुड़ा, गदगांव, सुमड़ा एवं अमलीडीही के अनेक किसान लाभान्वित किसानों पर परियोजना का व्यापक प्रभाव पड़ा है, जो किसानों के चेहरे में स्पष्टतया देखी जा सकती है। जो किसान कभी अपने इस बंजर, परिया भूमि में मात्र 4-5 महुँआ पेड के देखरेख एवं मूंग, मुंगफली व उरद के आंशिक उत्पादन में अपना समय व्यतीत करते थे। आज वहीं किसान अपने उसी जमीन में दशहरी, लंगड़ा व आम्रपाली जैसे स्वादिष्ट आम फल उत्पादित कर धीरे धीरे ही सही पर पर्याप्त आय अर्जन करने में सक्षम हए हैं।

क्या कहते हैं खुशहाल किसान- जो किसान कभी पूरे कृषि सत्र में अत्यधिक व कठोर परिश्रम के पश्चात् आंशिक आय पर संतुष्ट होने पर विवश थे। वहीं किसान आज आम फल का विक्रय कर लाखों रूपये आय अर्जित करने में सफल हो रहे हैं। अपने खुशी को अभिव्यक्त करते हुए कचकोबा के रतिराम राठिया, यह कहते हुए गदगद हो उठता है कि- 'नाबार्ड एवं ओ.पी जिंदल समाज कल्याण समिति, जेपीएल तमनार द्वारा संचालित वाड़ी विकास परियोजना हमारे जीवन को खुशियों से भर दिया है। परियोजना से हमारे परिवार को नया आधार मिला है। हम कभी 04 महुँआ पेड़ के देख रेख में अपना समय व्यतीत करते थे, वहीं हमने आम, नीबू एवं साग, भाँजी बेचकर 1.85 लाख रूपये अर्जित किये हैं। वाड़ी से ही आय अर्जित कर मैनें एक बोलेरो वाहन खरीदा हुँ। मेरे पौत्र- पौत्री प्राइवेट विद्यालयों में अध्ययन कर रहे है। वाड़ी विकास परियोजना के सहयोग से अब हम अपने परत भूमि में भी खेती प्रारंभ कर दिया हुँ है।' परियोजना से कचकोबा के मधुराम राठिया, करम सिंह राठिया, हरीशंकर राठिया, अक्ती राम राठिया, पंचराम तिग्गा, नकुल राठिया, किरीत राठिया, प्रसन्न राठिया, लक्ष्मण राठिया, राधेश्याम राठिया, रामलाल राठिया, कन्हैया लाल राठिया, प्रेमसागर राठिया ऐसे किसान है, जो इस परियोजना से लाखों रूपये आयअर्जित कर अपने व परिवार के आर्थिक स्थिति को सुदृड़ किये हैं।

आदिवासी किसान भाईयों के इस अप्रतिम सफलता एवं उनके चेहरे की मोहक मुस्कान को देखकर स्वमेव ही कहा जा सकता है कि वाड़ी विकास परियोजना तमनारांचल के किसानों के जीवन में ''मील का पत्थर साबित'' हुई है। जबकि यह उपलब्धि तो महज आगाज है, निष्कर्ष तो अभी शेष हैं। वर्तमान में ये आम के पेड़ छोटे हैं और इनमें 25 से 30 किलोग्राम ही फसल उपलब्ध हो रहे हैं, जब ये पौधे बड़ें होगें, तब यहीं पौधे 01 से 1.50 क्विंटल फल देना प्रारंभ करेंगें, और तब किसानों की आय वर्तमान की





